

## द्वितीयोऽध्यायः

देवताओंके तेजसे देवीका प्रादुर्भाव और  
महिषासुरकी सेनाका वध

### विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुऋषिः, महालक्ष्मीदेवता, उष्णिक् छन्दः,  
शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुस्तत्त्वम्, यजुर्वेदः स्वरूपम्,  
श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थं मध्यमचरित्रजपे विनियोगः ।

### ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां  
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम् ।  
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां  
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

‘ॐ ह्रीं’ ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा ।

ॐ मध्यम चरित्रके विष्णु ऋषि, महालक्ष्मी देवता, उष्णिक् छन्द,  
शाकम्भरी शक्ति, दुर्गा बीज, वायु तत्त्व और यजुर्वेद स्वरूप है। श्रीमहा-  
लक्ष्मीकी प्रसन्नताके लिये मध्यम चरित्रके पाठमें इसका विनियोग है।

मैं कमलके आसनपर बैठी हुई प्रसन्न मुखवाली महिषासुरमर्दिनी  
भगवती महालक्ष्मीका भजन करता हूँ, जो अपने हाथोंमें अक्षमाला, फरसा,  
गदा, बाण, वज्र, पद्म, धनुष, कुण्डिका, दण्ड, शक्ति, खड्ग, ढाल, शंख, घण्टा,  
मधुपात्र, शूल, पाश और चक्र धारण करती हैं।

ऋषि कहते हैं— ॥ १ ॥ पूर्वकालमें देवताओं और असुरोंमें पूरे सौ

महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥ २ ॥  
 तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम् ।  
 जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥  
 ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम् ।  
 पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥ ४ ॥  
 यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम् ।  
 त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥ ५ ॥  
 सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च ।  
 अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥ ६ ॥  
 स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि ।  
 विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥ ७ ॥  
 एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम् ।  
 शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥ ८ ॥

वर्षोत्क घोर संग्राम हुआ था। उसमें असुरोंका स्वामी महिषासुर था और देवताओंके नायक इन्द्र थे। उस युद्धमें देवताओंकी सेना महाबली असुरोंसे परास्त हो गयी। सम्पूर्ण देवताओंको जीतकर महिषासुर इन्द्र बन बैठा ॥ २-३ ॥ तब पराजित देवता प्रजापति ब्रह्माजीको आगे करके उस स्थानपर गये, जहाँ भगवान् शंकर और विष्णु विराजमान थे ॥ ४ ॥ देवताओंने महिषासुरके पराक्रम तथा अपनी पराजयका यथावत् वृत्तान्त उन दोनों देवेश्वरोंसे विस्तारपूर्वक कह सुनाया ॥ ५ ॥ वे बोले—‘भगवन्! महिषासुर सूर्य, इन्द्र, अग्नि, वायु, चन्द्रमा, यम, वरुण तथा अन्य देवताओंके भी अधिकार छीनकर स्वयं ही सबका अधिष्ठाता बना बैठा है ॥ ६ ॥ उस दुरात्मा महिषने समस्त देवताओंको स्वर्गसे निकाल दिया है। अब वे मनुष्योंकी भाँति पृथ्वीपर विचरते हैं ॥ ७ ॥ दैत्योंकी यह सारी करतूत हमने आपलोगोंसे कह सुनायी। अब हम आपकी ही शरणमें आये हैं। उसके वधका कोई उपाय सोचिये’ ॥ ८ ॥

इत्थं निशम्य देवानां वचांसि मधुसूदनः ।  
 चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥ ९ ॥  
 ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः ।  
 निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च ॥ १० ॥  
 अन्येषां चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः ।  
 निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥  
 अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम् ।  
 ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम् ॥ १२ ॥  
 अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम् ।  
 एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥  
 यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम् ।  
 याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णुतेजसा ॥ १४ ॥

इस प्रकार देवताओंके वचन सुनकर भगवान् विष्णु और शिवने दैत्योंपर बड़ा क्रोध किया। उनकी भाँहें तन गयीं और मुँह टेढ़ा हो गया ॥ ९ ॥ तब अत्यन्त कोपमें भरे हुए चक्रपाणि श्रीविष्णुके मुखसे एक महान् तेज प्रकट हुआ। इसी प्रकार ब्रह्मा, शंकर तथा इन्द्र आदि अन्यान्य देवताओंके शरीरसे भी बड़ा भारी तेज निकला। वह सब मिलकर एक हो गया ॥ १०-११ ॥ महान् तेजका वह पुंज जाज्वल्यमान पर्वत-सा जान पड़ा। देवताओंने देखा, वहाँ उसकी ज्वालाएँ सम्पूर्ण दिशाओंमें व्याप्त हो रही थीं ॥ १२ ॥ सम्पूर्ण देवताओंके शरीरसे प्रकट हुए उस तेजकी कहीं तुलना नहीं थी। एकत्रित होनेपर वह एक नारीके रूपमें परिणत हो गया और अपने प्रकाशसे तीनों लोकोंमें व्याप्त जान पड़ा ॥ १३ ॥ भगवान् शंकरका जो तेज था, उससे उस देवीका मुख प्रकट हुआ। यमराजके तेजसे उसके सिरमें बाल निकल आये। श्रीविष्णुभगवान्के तेजसे उसकी भुजाएँ उत्पन्न हुईं ॥ १४ ॥

सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत् ।  
 वारुणेन च जङ्घोरु नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥  
 ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा ।  
 वसूनां च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥ १६ ॥  
 तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा ।  
 नयनत्रितयं जज्ञे तथा पावकतेजसा ॥ १७ ॥  
 भ्रुवौ च संध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च ।  
 अन्येषां चैव देवानां सम्भवस्तेजसां शिवा ॥ १८ ॥  
 ततः समस्तदेवानां तेजोराशिसमुद्भवाम् ।  
 तां विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः\* ॥ १९ ॥

चन्द्रमाके तेजसे दोनों स्तनोंका और इन्द्रके तेजसे मध्यभाग (कटिप्रदेश)-का प्रादुर्भाव हुआ। वरुणके तेजसे जंघा और पिंडली तथा पृथ्वीके तेजसे नितम्बभाग प्रकट हुआ ॥ १५ ॥ ब्रह्माके तेजसे दोनों चरण और सूर्यके तेजसे उसकी अँगुलियाँ हुईं। वसुओंके तेजसे हाथोंकी अँगुलियाँ और कुबेरके तेजसे नासिका प्रकट हुईं ॥ १६ ॥ उस देवीके दाँत प्रजापतिके तेजसे और तीनों नेत्र अग्निके तेजसे प्रकट हुए थे ॥ १७ ॥ उसकी भौंहें संध्याके और कान वायुके तेजसे उत्पन्न हुए थे। इसी प्रकार अन्यान्य देवताओंके तेजसे भी उस कल्याणमयी देवीका आविर्भाव हुआ ॥ १८ ॥

तदनन्तर समस्त देवताओंके तेजःपुंजसे प्रकट हुई देवीको देखकर महिषासुरके सताये हुए देवता बहुत प्रसन्न हुए ॥ १९ ॥

\* कई प्रतियोंमें इसके बाद 'ततो देवा ददुस्तस्यै स्वानि स्वान्यायुधानि च। ऊचुर्जयजयेत्युच्चैर्जयन्तीं ते जयैषिणः ॥' इतना पाठ अधिक है।

शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक् ।  
 चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य<sup>१</sup> स्वचक्रतः ॥ २० ॥  
 शङ्खं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः ।  
 मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥ २१ ॥  
 वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य<sup>२</sup> कुलिशादमराधिपः ।  
 ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥ २२ ॥  
 कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ ।  
 प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥  
 समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः ।  
 कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म<sup>३</sup> च निर्मलम् ॥ २४ ॥  
 क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे ।  
 चूडामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि च ॥ २५ ॥  
 अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान् सर्वबाहुषु ।

पिनाकधारी भगवान् शंकरने अपने शूलसे एक शूल निकालकर उन्हें दिया; फिर भगवान् विष्णुने भी अपने चक्रसे चक्र उत्पन्न करके भगवतीको अर्पण किया ॥ २० ॥ वरुणने भी शंख भेंट किया, अग्निने उन्हें शक्ति दी और वायुने धनुष तथा बाणसे भरे हुए दो तरकस प्रदान किये ॥ २१ ॥ सहस्र नेत्रोंवाले देवराज इन्द्रने अपनेवज्रसे वज्र उत्पन्न करके दिया और ऐरावत हाथीसे उतारकर एक घण्टा भी प्रदान किया ॥ २२ ॥ यमराजने कालदण्डसे दण्ड, वरुणने पाश, प्रजापतिने स्फटिकाक्षकी माला तथा ब्रह्माजीने कमण्डलु भेंट किया ॥ २३ ॥ सूर्यने देवीके समस्त रोम-कूपोंमें अपनी किरणोंका तेज भर दिया। कालने उन्हें चमकती हुई ढाल और तलवार दी ॥ २४ ॥ क्षीरसमुद्रने उज्ज्वल हार तथा कभी जीर्ण न होनेवाले दो दिव्य वस्त्र भेंट किये। साथ ही उन्होंने दिव्य चूडामणि, दो कुण्डल, कड़े, उज्ज्वल अर्धचन्द्र, सब बाहुओंके लिये केयूर, दोनों चरणोंके लिये निर्मल नूपुर, गलेकी सुन्दर हँसली और सब अँगुलियोंमें

नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥ २६ ॥  
 अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च ।  
 विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ॥ २७ ॥  
 अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम् ।  
 अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥ २८ ॥  
 अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम् ।  
 हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २९ ॥  
 ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः ।  
 शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३० ॥  
 नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम् ।  
 अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥ ३१ ॥  
 सम्मानिता ननादोच्चैः सादृहासं मुहुर्मुहुः ।  
 तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥  
 अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत् ।  
 चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥ ३३ ॥

पहननेके लिये रत्नोंकी बनी अँगूठियाँ भी दीं। विश्वकर्माने उन्हें अत्यन्त निर्मल फरसा भेंट किया ॥ २५—२७ ॥ साथ ही अनेक प्रकारके अस्त्र और अभेद्य कवच दिये; इनके सिवा मस्तक और वक्षःस्थलपर धारण करनेके लिये कभी न कुम्हलानेवाले कमलोंकी मालाएँ दीं ॥ २८ ॥ जलधिने उन्हें सुन्दर कमलका फूल भेंट किया। हिमालयने सवारीके लिये सिंह तथा भौँति-भौँतिके रत्न समर्पित किये ॥ २९ ॥ धनाध्यक्ष कुबेरने मधुसे भरा पानपात्र दिया तथा सम्पूर्ण नागोंके राजा शेषने, जो इस पृथ्वीको धारण करते हैं, उन्हें बहुमूल्य मणियोंसे विभूषित नागहार भेंट दिया। इसी प्रकार अन्य देवताओंने भी आभूषण और अस्त्र-शस्त्र देकर देवीका सम्मान किया। तत्पश्चात् उन्होंने बारंबार अदृहासपूर्वक उच्चस्वरसे गर्जना की। उनके भयंकर नादसे सम्पूर्ण आकाश गूँज उठा ॥ ३०—३२ ॥ देवीका वह अत्यन्त उच्चस्वरसे किया हुआ

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः ।  
 जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम्\* ॥ ३४ ॥  
 तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः ।  
 दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥  
 सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः ।  
 आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥ ३६ ॥  
 अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः ।  
 स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥ ३७ ॥  
 पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम् ।  
 क्षोभिताशेषपातालां धनुर्ज्यानिःस्वनेन ताम् ॥ ३८ ॥

सिंहनाद कहीं समा न सका, आकाश उसके सामने लघु प्रतीत होने लगा। उससे बड़े जोरकी प्रतिध्वनि हुई, जिससे सम्पूर्ण विश्वमें हलचल मच गयी और समुद्र काँप उठे ॥ ३३ ॥ पृथ्वी डोलने लगी और समस्त पर्वत हिलने लगे। उस समय देवताओंने अत्यन्त प्रसन्नताके साथ सिंहवाहिनी भवानीसे कहा—‘देवि! तुम्हारी जय हो’ ॥ ३४ ॥ साथ ही महर्षियोंने भक्तिभावसे विनम्र होकर उनका स्तवन किया।

सम्पूर्ण त्रिलोकीको क्षोभग्रस्त देख दैत्यगण अपनी समस्त सेनाको कवच आदिसे सुसज्जित कर, हाथोंमें हथियार ले सहसा उठकर खड़े हो गये। उस समय महिषासुरने बड़े क्रोधमें आकर कहा—‘आः! यह क्या हो रहा है?’ फिर वह सम्पूर्ण असुरोंसे घिरकर उस सिंहनादकी ओर लक्ष्य करके दौड़ा और आगे पहुँचकर उसने देवीको देखा, जो अपनी प्रभासे तीनों लोकोंको प्रकाशित कर रही थीं ॥ ३५—३७ ॥ उनके चरणोंके भारसे पृथ्वी दबी जा रही थी। माथेके मुकुटसे आकाशमें रेखा-सी खिंच रही थी तथा वे अपने धनुषकी टंकारसे सातों पातालोंको क्षुब्ध किये देती थीं ॥ ३८ ॥

\* पा०—वाहनाम्।

दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम् ।  
 ततः प्रवृते युद्धं तथा देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥  
 शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदिगन्तरम् ।  
 महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥ ४० ॥  
 युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः ।  
 रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥ ४१ ॥  
 अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः ।  
 पञ्चाशद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२ ॥  
 अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे ।  
 गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः<sup>१</sup> परिवारितः<sup>२</sup> ॥ ४३ ॥  
 वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत ।  
 बिडालाख्योऽयुतानां च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥ ४४ ॥

देवी अपनी हजारों भुजाओंसे सम्पूर्ण दिशाओंको आच्छादित करके खड़ी थीं । तदनन्तर उनके साथ दैत्योंका युद्ध छिड़ गया ॥ ३९ ॥ नाना प्रकारके अस्त्र-शस्त्रोंके प्रहारसे सम्पूर्ण दिशाएँ उद्भासित होने लगीं । चिक्षुर नामक महान् असुर महिषासुरका सेनानायक था ॥ ४० ॥ वह देवीके साथ युद्ध करने लगा । अन्य दैत्योंकी चतुरंगिणी सेना साथ लेकर चामर भी लड़ने लगा । साठ हजार रथियोंके साथ आकर उदग्र नामक महादैत्यने लोहा लिया ॥ ४१ ॥ एक करोड़ रथियोंको साथ लेकर महाहनु नामक दैत्य युद्ध करने लगा । जिसके रोएँ तलवारके समान तीखे थे, वह असिलोमा नामका महादैत्य पाँच करोड़ रथी सैनिकोंसहित युद्धमें आ डटा ॥ ४२ ॥ साठ लाख रथियोंसे घिरा हुआ बाष्कल नामक दैत्य भी उस युद्धभूमिमें लड़ने लगा । परिवारित<sup>२</sup> नामक राक्षस हाथीसवार और घुड़सवारोंके अनेक दलों तथा एक करोड़ रथियोंकी

१. पा०—कैरुग्रदर्शनः । २. परितो वारयति शत्रूनि निति व्युत्पत्तिः ।



युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवारितः\* ।  
 अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥ ४५ ॥  
 युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः ।  
 कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥ ४६ ॥  
 हयानां च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः ।  
 तोमरैर्भिन्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥  
 युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः ।  
 केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशांस्तथापरे ॥ ४८ ॥  
 देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः ।  
 सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥ ४९ ॥  
 लीलयैव प्रचिच्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी ।  
 अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुरर्षिभिः ॥ ५० ॥

सेना लेकर युद्ध करने लगा। बिडाल नामक दैत्य पाँच अरब रथियोंसे घिरकर लोहा लेने लगा। इनके अतिरिक्त और भी हजारों महादैत्य रथ, हाथी और घोड़ोंकी सेना साथ लेकर वहाँ देवीके साथ युद्ध करने लगे। स्वयं महिषासुर उस रणभूमिमें कोटि-कोटि सहस्र रथ, हाथी और घोड़ोंकी सेनासे घिरा हुआ खड़ा था। वे दैत्य देवीके साथ तोमर, भिन्दिपाल, शक्ति, मूसल, खड्ग, परशु और पट्टिश आदि अस्त्र-शस्त्रोंका प्रहार करते हुए युद्ध कर रहे थे। कुछ दैत्योंने उनपर शक्तिका प्रहार किया, कुछ लोगोंने पाश फेंके ॥ ४३—४८ ॥ तथा कुछ दूसरे दैत्योंने खड्गप्रहार करके देवीको मार डालनेका उद्योग किया। देवीने भी क्रोधमें भरकर खेल-खेलमें ही अपने अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा करके दैत्योंके वे समस्त अस्त्र-शस्त्र काट डाले। उनके मुखपर परिश्रम या थकावटका रंचमात्र भी चिह्न नहीं था, देवता

\* किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद 'कृतः कालो रथानां च रणे पञ्चाशतायुतैः। युयुधे संयुगे तत्र तावद्भिः परिवारितः ॥' इतना पाठ अधिक है।

मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी ।  
 सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेसरी ॥ ५१ ॥  
 चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः ।  
 निःश्वासान् मुमुचे यांश्च युध्यमाना रणेऽम्बिका ॥ ५२ ॥  
 त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः ।  
 युयुधुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥ ५३ ॥  
 नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः ।  
 अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खांस्तथापरे ॥ ५४ ॥  
 मृदङ्गांश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे ।  
 ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः \* ॥ ५५ ॥  
 खड्गादिभिश्च शतशो निजघान महासुरान् ।  
 पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ ५६ ॥

और ऋषि उनकी स्तुति करते थे और वे भगवती परमेश्वरी दैत्योंके शरीरोंपर अस्त्र-शस्त्रोंकी वर्षा करती रहीं।

देवीका वाहन सिंह भी क्रोधमें भरकर गर्दनके बालोंको हिलाता हुआ असुरोंकी सेनामें इस प्रकार विचरने लगा, मानो वनोंमें दावानल फैल रहा हो। रणभूमिमें दैत्योंके साथ युद्ध करती हुई अम्बिकादेवीने जितने निःश्वास छोड़े, वे सभी तत्काल सैकड़ों-हजारों गणोंके रूपमें प्रकट हो गये और परशु, भिन्दिपाल, खड्ग तथा पट्टिश आदि अस्त्रोंद्वारा असुरोंका सामना करने लगे ॥ ४९—५३ ॥ देवीकी शक्तिसे बढ़े हुए वे गण असुरोंका नाश करते हुए नगाड़ा और शंख आदि बाजे बजाने लगे ॥ ५४ ॥ उस संग्राम-महोत्सवमें कितने ही गण मृदंग बजा रहे थे। तदनन्तर देवीने त्रिशूलसे, गदासे, शक्तिकी वर्षासे और खड्ग आदिसे सैकड़ों महादैत्योंका संहार कर डाला। कितनोंको घण्टेके भयंकर नादसे मूर्च्छित करके मार गिराया ॥ ५५—५६ ॥

\* पा०— शरवृष्टिभिः।

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् ।  
 केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ ५७ ॥  
 विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते ।  
 वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ५८ ॥  
 केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि ।  
 निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥ ५९ ॥  
 श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः ।  
 केषांचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ६० ॥  
 शिरांसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः ।  
 विच्छिन्नजङ्घास्त्वपरे पेतुरुर्व्या महासुराः ॥ ६१ ॥  
 एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः ।  
 छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२ ॥

बहुतेरे दैत्योंको पाशसे बाँधकर धरतीपर घसीटा। कितने ही दैत्य उनकी तीखी तलवारकी मारसे दो-दो टुकड़े हो गये ॥ ५७ ॥ कितने ही गदाकी चोटसे घायल हो धरतीपर सो गये। कितने ही मूसलकी मारसे अत्यन्त आहत होकर रक्त वमन करने लगे। कुछ दैत्य शूलसे छाती फट जानेके कारण पृथ्वीपर ढेर हो गये। उस रणांगणमें बाणसमूहोंकी वृष्टिसे कितने ही असुरोंकी कमर टूट गयी ॥ ५८-५९ ॥ बाजकी तरह झपटनेवाले देवपीडक दैत्यगण अपने प्राणोंसे हाथ धोने लगे। किन्हींकी बाँहें छिन्न-भिन्न हो गयीं। कितनोंकी गर्दनें कट गयीं। कितने ही दैत्योंके मस्तक कट-कटकर गिरने लगे। कुछ लोगोंके शरीर मध्यभागमें ही विदीर्ण हो गये। कितने ही महादैत्य जाँघें कट जानेसे पृथ्वीपर गिर पड़े। कितनोंको ही देवीने एक बाँह, एक पैर और एक नेत्रवाले करके दो टुकड़ोंमें चीर डाला। कितने ही दैत्य मस्तक कट जानेपर

कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः ।  
 ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥  
 कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः ।  
 तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः\* ॥ ६४ ॥  
 पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा ।  
 अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥ ६५ ॥  
 शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्त्रुवुः ।  
 मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥ ६६ ॥  
 क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका ।  
 निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥ ६७ ॥

भी गिरकर फिर उठ जाते और केवल धड़के ही रूपमें अच्छे-अच्छे हथियार हाथमें ले देवीके साथ युद्ध करने लगते थे। दूसरे कबन्ध युद्धके बाजोंकी लयपर नाचते थे ॥ ६०—६३ ॥ कितने ही बिना सिरके धड़ हाथोंमें खड्ग, शक्ति और ऋष्टि लिये दौड़ते थे तथा दूसरे-दूसरे महादैत्य 'ठहरो! ठहरो!!' यह कहते हुए देवीको युद्धके लिये ललकारते थे। जहाँ वह घोर संग्राम हुआ था, वहाँकी धरती देवीके गिराये हुए रथ, हाथी, घोड़े और असुरोंकी लाशोंसे ऐसी पट गयी थी कि वहाँ चलना-फिरना असम्भव हो गया था ॥ ६४-६५ ॥ दैत्योंकी सेनामें हाथी, घोड़े और असुरोंके शरीरोंसे इतनी अधिक मात्रामें रक्तपात हुआ था कि थोड़ी ही देरमें वहाँ खूनकी बड़ी-बड़ी नदियाँ बहने लगीं ॥ ६६ ॥ जगदम्बाने असुरोंकी विशाल सेनाको क्षणभरमें नष्ट कर दिया—ठीक उसी तरह, जैसे तृण और काठके भारी ढेरको आग कुछ ही क्षणोंमें भस्म कर देती है ॥ ६७ ॥

\* किसी-किसी प्रतिमें इसके बाद 'रुधिरौघविलुप्ताङ्गाः संग्रामे लोमहर्षणे।' इतना पाठ अधिक है।

स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः ।  
शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥ ६८ ॥  
देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः ।  
यथैषां<sup>१</sup> तुतुषुर्देवाः<sup>२</sup> पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ॐ ॥ ६९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये  
महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

उवाच१, श्लोकाः ६८, एवम् ६९,  
एवमादितः १७३ ॥

और वह सिंह भी गर्दनके बालोंको हिला-हिलाकर जोर-जोरसे गर्जना करता हुआ दैत्योंके शरीरोंसे मानो उनके प्राण चुने लेता था ॥ ६८ ॥ वहाँ देवीके गणोंने भी उन महादैत्योंके साथ ऐसा युद्ध किया, जिससे आकाशमें खड़े हुए देवतागण उनपर बहुत संतुष्ट हुए और फूल बरसाने लगे ॥ ६९ ॥

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेयपुराणमें सावर्णिक मन्वन्तरकी कथाके अन्तर्गत देवीमाहात्म्यमें 'महिषासुरकी सेनाका वध'  
नामक दूसरा अध्याय पूरा हुआ ॥ २ ॥